

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 12th



aglasem.com

Class : 12th

Subject : History

Chapter : 2

Chapter Name : आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं

Q1 आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्पकला के उत्पादन के प्रमाणों की चर्चा कीजिए। हड़प्पा के नगरों के प्रमाण से ये प्रमाण कितने भिन्न हैं?

Answer. यद्यपि इनमें से अधिकांश स्थलों पर व्यापक रूप से खुदाई करना संभव नहीं है, क्योंकि आज भी इन क्षेत्रों में लोग रहते हैं। हड़प्पा शहरों में खुदाई तुलनात्मक रूप से आसान थी। कमियों के बावजूद, इस काल से विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों को बरामद किया गया है जो इस काल के शिल्प कौशल पर प्रकाश डालती हैं। इनमें उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियाँ मिली हैं जिन पर चमकदार कलई चढ़ी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्रा कहा जाता है। संभवतः इनका उपयोग अमीर लोग किया करते होंगे। साथ ही सोने चाँदी, कांस्य, ताँबे, हाथी दाँत, शीशे जैसे तरह-तरह के पदार्थों के बने गहने, उपकरण, हथियार, बर्तन, सीप और पक्की मिट्टी मिली हैं। यह संभावना है कि शिल्पकारों ने बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए लोहे के उपकरणों की एक श्रृंखला का उपयोग किया था लेकिन हड़प्पा शहरों में लोहे के उपकरणों का कोई उपयोग नहीं किया गया था।

Page : 51 , Block Name : उत्तर दीजिये

Q2 महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षणों का वर्णन कीजिए।

Answer. प्रथम महाजनपद छठी और चौथी ईसा पूर्व के बीच अस्तित्व में था। बौद्ध और जैन धर्म के आरंभिक ग्रंथों में महाजन-पद नाम से सोलह राज्यों का उल्लेख मिलता है। जिनमें से कुछ हैं वाज्जी , मगध, कोशल , कुरु, पांचाल , अवन्ती, और गांधार । मगध सभी में प्रथम एवं सबसे शक्तिशाली महाजनपद था।

महाजनपदों की मुख्य विशेषताएँ हैं:

→ अधिकांश महाजनपदों पर राजाओं का शासन था, जबकि कुछ गणों या संघों पर कई लोगों का शासन था, जिन्हें सामूहिक रूप से अक्सर राजा कहा जाता था।

→ प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी जिसे प्रायः किले से घेरा जाता था।

→ ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों की रचना शुरू की। इनमें शासक सहित अन्य के लिए नियमों का

निर्धारण किया गया था ।

Page : 51 , Block Name : उत्तर दीजिये

Q3 सामान्य लोगों के जीवन का पुनर्निर्माण इतिहास-कार कैसे करते हैं?

Answer. इतिहासकारों ने सामान्य लोगों के जीवन का पुनर्निर्माण करने के लिए कई तरह के स्रोतों का प्रयोग किया है। जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं -

→ समकालीन कृतियाँ जैसे मेगास्थनीज के लेख, अर्थशास्त्रा (जिसके कुछ भाग की रचना चाणक्य द्वारा की गई थी) पौराणिक और जैन साहित्य एवं संस्कृत साहित्यिक रचनाएँ।

→ पत्थरों और स्तंभों पर मिले अशोक के अभिलेख।

→ कई नगरों में छोटे दानात्मक अभिलेख प्राप्त होते हैं। इनमें दाता के नाम के साथ-साथ प्रायः उसके व्यवसाय का भी उल्लेख होता है। इनमें नगरों में रहने वाले धोबी, बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्ण-कार, लौहार, अधिकारी, धार्मिक गुरु, व्यापारी और राजाओं के बारे में विवरण लिखे होते हैं।

Page : 51 , Block Name : उत्तर दीजिये

Q4 पांड्य सरदार (स्रोत 3) को दी जाने वाली वस्तुओं की तुलना दंगुन गाँव (स्रोत 8) की वस्तुओं से कीजिए। आपको क्या समानताएँ और असमानताएँ दिखाई देती हैं?

Answer. पांड्य सरदार को दी गई चीजों की सूची में हाथी दाँत, सुगंधित लकड़ी, हिरण के बाल से बने पंखे, शहद, चंदन, लाल गेरू, सुरमा, हल्दी, इलायची, काली मिर्च, इत्यादि जैसी चीजें शामिल थीं। वे नारियल, आम, औषधीय पौधे, फल, प्याज, गन्ना, फूल, एस्का नट, केले, बेबी टाइगर, शेर, हाथी, बंदर, भालू, हिरण, कस्तूरी मृग, लोमड़ी, मोर, कस्तूरी बिल्ली, जंगली मुर्गे, बोलने वाले तोते, आदि भी लाए थे।

दंगुन गाँव में पैदा होने वाली चीजें घास, नीम की खाल, लकड़ी का कोयला, किण्वित शराब, नमक, दूध और फूल, खनिज, आदि थे। दोनों में एकमात्र समानता फूल हैं।

Page : 51 , Block Name : उत्तर दीजिये

Q5 अभिलेखशास्त्रियों की कुछ समस्याओं की सूची बनाइए।

Answer. अभिलेखशास्त्री वह व्यक्ति होता है शिलालेखों का अध्ययन करता है। अभिलेखशास्त्रियों के सामने आने वाली समस्याएं हैं:

→ कभी-कभी अक्षरों को हलके ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।

→ कभी-कभी अभिलेख नष्ट भी हो सकते हैं जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।

→ अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के बारे में पूर्ण रूप से ज्ञान हो पाना सदैव सरल नहीं होता क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं।

→ शिलालेखों की सामग्री लगभग उस व्यक्ति या व्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य को दर्शाती है जो उन्हें कमीशन करते थे।

Page : 51 , Block Name : उत्तर दीजिये

Q6 मौर्य प्रशासन के प्रमुख अभिलक्षणों की चर्चा कीजिए। अशोक के अभिलेखों में इनमें से कौन-कौन से तत्वों के प्रमाण मिलते हैं?

Answer. चंद्र-गुप्त मौर्य मौर्य साम्राज्य के संस्थापक थे। उनका शासन पश्चिमोत्तर में अफ़ग़ानिस्तान और बलूचिस्तान तक फैला था।

मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ हैं:

→ मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी और मौर्य साम्राज्य के चार प्रांतीय केंद्र तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरि थे।

→ राजधानी और प्रांतीय केंद्रों के आसपास के क्षेत्रों में प्रशासनिक नियंत्रण सबसे मजबूत था।

→ मेगस्थनीज ने सैन्य गतिविधियों के समन्वय के लिए छः उप-समितियों वाली समिति का उल्लेख किया है। उपसमितियाँ एवं उनकी गतिविधियाँ इस प्रकार हैं -

-पहली समिति नौसेना की देखभाल करती थी।

-दूसरी समिति परिवहन और प्रावधानों का प्रबंधन करती थी।

-तीसरी समिति पैदल सैनिकों के लिए जिम्मेदार थी।

- चौथी समिति घोड़ों के लिए जिम्मेदार थी
- पाँचवीं समिति रथों के लिए जिम्मेदार थी।
- छठी समिति हाथियों के लिए जिम्मेदार थी।

→ चन्द्र-गुप्त मौर्य के पौत्र अशोक ने धम्म का प्रचार करके अपने साम्राज्य को एक साथ रखने की कोशिश की। धम्म सिद्धांत या लोगों के लिए नैतिक आचार संहिता का समूह था। उनके अनुसार, यह इस संसार में और इसके बाद के संसार में लोगों की भलाई सुनिश्चित करेगा। धम्म के संदेश के प्रसार के लिए जिन विशेष अधिकारियों को नियुक्त किया गया था उन्हें धम्म- महामत्ता के रूप में जाना जाता था।

→ एक मजबूत सड़क नेटवर्क था जो लोगों और सामानों की आवाजाही सुगम बनता था ।

अशोक ने अपने संदेशों को अपनी प्रजा और अधिकारियों के लिए पत्थर की स्तंभों - प्राकृतिक चट्टानों और साथ ही स्तंभों पर अंकित कराया, उन्होंने शिलालेखों का उपयोग यह घोषित करने के लिए किया कि वे धम्म को क्या समझते हैं उनके अनुसार इसमें बड़ों के प्रति सम्मान, ब्राह्मणों के प्रति उदारता और सांसारिक जीवन का त्याग करने वालों, दासों और नौकरों के साथ विनम्रता से व्यवहार करना और स्वयं के अलावा अन्य धर्मों और परंपराओं के प्रति सम्मान शामिल था ।

Page : 52 , Block Name : निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए

Q7 यह बीसवीं शताब्दी के एक सुविख्यात अभिलेखशास्त्री, डी.सी. सरकार का वक्तव्य है: भारतीयों के जीवन, संस्कृति, और गतिविधियों का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिसका प्रतिबिंब अभिलेखों में नहीं है: चर्चा कीजिए।

Answer. सुविख्यात अभिलेखशास्त्री, डी.सी. सरकार के वक्तव्य में उन शिलालेखों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है जो जीवन के सभी पहलुओं की व्याख्या करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण जानकारियाँ जो हमें अभिलेखों से प्राप्त होती हैं:

- हमें उस समय में मौजूद राजाओं और राज्यों के बारे में पता चलता है।
- हम उस समय के राज्यों की सीमाओं के बारे में जानते हैं।
- हमें उस समय में मौजूद समाज और लोगों के बारे में जानकारी मिलती है।
- हमें शासकों के उनकी प्रजा के प्रति व्यवहार के बारे में जानकारी मिलती है ।
- हम लोगों की धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं के बारे में जानते हैं।

→ हमें उन युद्धों के बारे में पता चलता है जो उस समय लड़े गए थे और युद्ध में प्रयोग की जाने वाली तकनीकों के बारे में भी हम जान पते हैं ।

→ हम लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उस समय में मौजूद लोगों के विभिन्न वर्गों के बारे में जानते हैं।

→ हमें राज्यों के अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों के बारे में जानकारी मिलती है ।

→ शिलालेख हमें प्रशासन और राज्यों की कानून-व्यवस्था के बारे में सूचना प्रदान करते हैं ।

→ शिलालेख हमें भूमि और राजस्व प्रणालियों की जानकारी प्रदान करते हैं।

इसलिए, निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि सुविख्यात अभिलेखशास्त्री द्वारा दिया गया कथन उपयुक्त है।

Page : 52 , Block Name : निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए

Q8 उत्तर-मौर्य काल में विकसित राजत्व के विचारों की चर्चा कीजिए।

Answer. उत्तर-मौर्य काल में विकसित राजाओं की विचारधारा देवीय राजा सिद्धांत की थी। राजाओं ने विभिन्न देवताओं के साथ अपने आप को जोड़कर स्वयं को ऊंचा दर्जा देना शुरू कर दिया । इस तरह की धारणा को निम्न उदाहरण के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है

→ कुषाण : इन्होंने मध्य एशिया से लेकर उत्तर-पश्चिम भारत तक फैले एक विशाल राज्य पर शासन किया। इनका इतिहास शिलालेखों और लिखित परंपराओं से पुनर्निर्मित किया गया है । मथुरा (उत्तर प्रदेश) के पास स्थित एक मंदिर में कुषाण शासकों की विशाल प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। इसी तरह की मूर्तियां अफगानिस्तान के एक धर्म-स्थल में भी पाई गई हैं। कई कुषाण शासकों ने 'देव-पुत्र' या 'देवता के पुत्र' शीर्षक को भी अपनाया ।

→ गुप्त:गुप्त साम्राज्य सहित कई बड़े साम्राज्यों के साक्ष्य मिलते हैं। इनमें से कई साम्राज्य सामंतों पर निर्भर थे। अपना निर्वाह स्थानीय संसाधनों द्वारा करते थे जिसमें भूमि पर नियंत्रण भी शामिल था। वे शासकों का आदर करते थे और उनकी सैनिक सहायता भी करते थे। जो सामंत शक्तिशाली होते थे वे राजा भी बन जाते थे और जो राजा दुर्बल होते थे, वे बड़े शासकों के अधीन हो जाते थे। गुप्त शासकों का इतिहास साहित्य, सिक्कों और अभिलेखों की सहायता से लिखा गया है। साथ ही कवियों द्वारा अपने राजा या स्वामी की प्रशंसा में लिखी प्रशस्तियाँ भी उपयोगी रही हैं। उदाहरण के तौर पर, इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध प्रयाग प्रशस्ति की रचना हरिषेण जो स्वयं गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के राज-कवि थे, ने संस्कृत में की थी।

Page : 52 , Block Name : निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए

Q9 वर्णित काल में कृषि के तौर-तरीकों में किस हद तक परिवर्तन हुए?

Answer. करों की बढ़ती मांग के कारण छठी शताब्दी ई.पू. से कृषि प्रथाओं महान परिवर्तन हुए। कई रणनीतियों को अपनाया गया जिसका उद्देश्य उत्पादन को बढ़ाना था ताकि मांगों को पूरा किया जा सके। इन रणनीतियों में से कुछ हैं:

→ कृषि के लिए हल का प्रयोग : उपज बढ़ाने का एक तरीका हल का प्रचलन था। जो छठी शताब्दी ई.पू. से ही गंगा और कावेरी की घाटियों के उर्वर कछारी क्षेत्र में फैल गया था। जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती थी वहाँ लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी। इसके अलावा गंगा की घाटी में धान की रोपाई की वजह से उपज में भारी वृद्धि होने लगी। हालाँकि किसानों को इसके लिए कमर-तोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

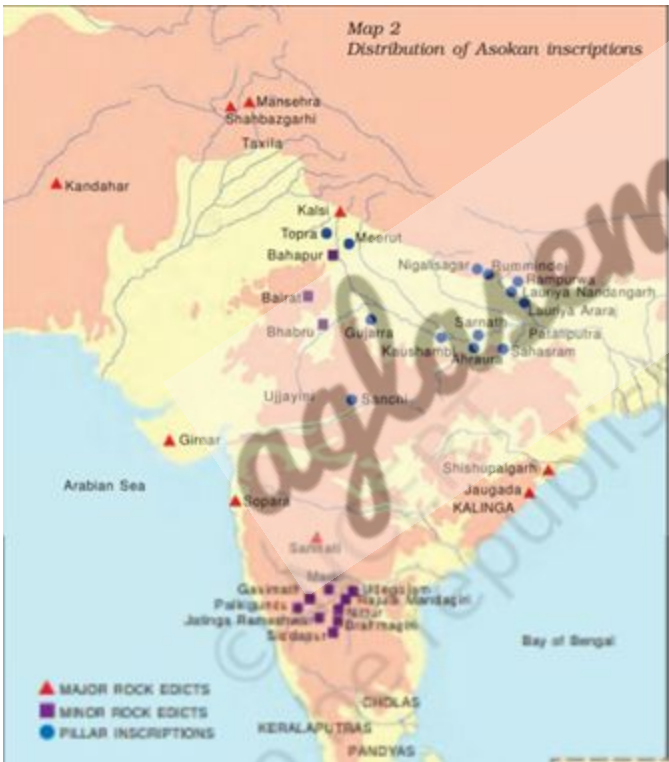
→ कुदाल का प्रयोग: पंजाब और राजस्थान जैसी अर्धशुष्क जमीन वाले क्षेत्रों में और उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर और मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में किसानों ने खेती के लिए कुदाल का उपयोग किया, जो ऐसे इलाकों के लिए कहीं अधिक उपयोगी थी।

→ सिंचाई का उपयोग : उपज बढ़ाने का एक और तरीका कुओं, तालाबों और कहीं-कहीं

नहरों के माध्यम से सिंचाई करना था।

Page : 52 , Block Name : निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए

Q10 1 और 2 की तुलना कीजिए और उन महाजनपदों की सूची बनाइए जो मौर्य साम्राज्य में शामिल रहे होंगे। क्या इस क्षेत्र में अशोक के कोई अभिलेख मिले हैं?



Answer. उन सभी महाजनपदों में अशोक के शिलालेख मिले हैं जिनको मौर्य साम्राज्य में शामिल किया गया था

- अशमका (सन्नती),
- गांधार (कंधार),
- मगध (सारनाथ),

- कुरु (मेरठ),
- कंबोज,
- शूरसेन,
- अवन्ति,
- वत्स,
- मत्स्य,
- चेदी,
- अंग,
- विदेह,
- पांचाल,
- वज्जि,
- काशी,
- मल्ल।

Page : 52 , Block Name : मानचित्र कार्य

aglasem.com